सूरह — एक कहानी

सूरह अल-मुल्क

बादशाहत

पूरा सफ़र — वो तीस आयतें जो अपने पढ़ने वाले की सिफ़ारिश करती हैं — जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 67 • 30 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

तबारकल्-लज़ी बि-यदिहिल्-मुल्क
1. बरकत वाला है वो जिसके हाथ में बादशाहत है।

अल्लज़ी ख़लक़ल्-मौत वल्-हयात लि-यब्लुवकुम अय्युकुम अह्सनु 'अमला
2. जिसने मौत और ज़िंदगी बनाई ताकि तुम्हें आज़माए कि तुम में कौन अमल में बेहतर है।

फ़-हल तरा मिन फ़ुतूर
3. तो क्या तुम्हें कोई झोल नज़र आता है?

व क़ालू लौ कुन्ना नस्म'उ औ न'क़िलु मा कुन्ना फ़ी अस्हाबिस्-स'ईर
10. और वो कहेंगे: काश हम सुनते या समझते, तो आग वालों में न होते।

व हुवल्-लतीफ़ुल्-ख़बीर
14. और वही बारीक-बीन, ख़बरदार है।

क़ुल अर-अयतुम इन अस्बह मा-उकुम ग़ौरन फ़-मंय्-य'तीकुम बि-मा-इम्-म'ईन
30. कहिए: भला बताओ, अगर तुम्हारा पानी ज़मीन में उतर जाए तो तुम्हें बहता पानी कौन ला देगा?

वो सूरह जो आपके लिए बहस करती है

बेटा, इस सूरह में दाख़िल होने से पहले, इसका मक़ाम जान लीजिए — क्योंकि ये बाक़ी ज़िंदगी आपके इसे साथ सुलूक करने का अंदाज़ बदल देगी।

नबी ﷺ ने फ़रमाया कि क़ुरआन में **तीस आयतों** वाली एक सूरह है जिसने अपने साथी की **सिफ़ारिश** की यहाँ तक कि उसे बख़्श दिया गया। और वो है 'तबारकल्-लज़ी बि-यदिहिल्-मुल्क'। इब्तिदाई मुसलमान इसे **अल-मानि'अह** कहते थे — रोकने वाली, बचाने वाली — और रिवायात इसे क़ब्र में अपने पढ़ने वाले का दिफ़ा करते हुए बयान करती हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि0) ने इसे 'अल-मुन्जियह' कहा — बचा लेने वाली।

और बयान है कि नबी ﷺ रात को तब तक न सोते जब तक तबारक और सूरह अस-

सजदा न पढ़ लेते।

बेटा, सोचिए इसका अमली मतलब। आज रात दस मिनट — तीस आयतें — और आप अपने आगे एक **वकील** भेज देते हैं उस सबसे तन्हा जगह तक जहाँ कोई इंसान कभी लेटेगा। और जिस चीज़ की भी आदत डालिए, इस एक की ज़रूर डालिए। और इसे एक ऐसा तावीज़ समझ कर मत पढ़िए जिसे आप समझते ही न हों; इसे एक ऐसे दोस्त की तरह पढ़िए जिसे आप जानते हों।

हर चीज़ किस के हाथ में है

'तबारकल्-लज़ी बि-यदिहिल्-मुल्क — बरकत वाला, बुलंद है वो जिसके **हाथ** में बादशाहत है — व हुव 'अला कुल्लि शै-इन क़दीर — और वो हर चीज़ पर क़ादिर है।'

बेटा, पहली आयत आपके हाथ में हक़ीक़त की असल चाबी दे देती है। हर वो चीज़ जिस से लोग डरते हैं और हर वो चीज़ जिसके पीछे लोग भागते हैं — नौकरियाँ, सेहत, हुकूमतें, इम्तिहान के नताइज, दूसरे इंसानों का रवैया — सब एक ही हाथ में है। जिस लम्हे एक दिल इस पर सचाई से क़रार पा जाता है, उसकी **ख़ौफ़ की फ़ेहरिस्त बहुत छोटी** हो जाती है।

और फिर, फ़ौरन, दूसरी आयत आपको बताती है कि **आप क्यों मौजूद हैं**: 'अल्लज़ी ख़लक़ल्-मौत वल्-हयात लि-यब्लुवकुम अय्युकुम अह्सनु 'अमला — जिसने मौत और ज़िंदगी बनाई ताकि तुम्हें आज़माए कि तुम में कौन अमल में बेहतर है।'

बेटा, यहाँ दो चीज़ें एक पूरी रात के ग़ौर की हक़दार हैं। **पहली:** मौत का ज़िक्र ज़िंदगी से पहले है। मौत कोई हादसा नहीं जो ज़िंदगी में ख़लल डाले; ये एक सोच-समझ कर की गई तख़्लीक़ है, और इसे पहले रखा गया क्योंकि इम्तिहान सिर्फ़ उस शख़्स के लिए मायने रखता है जो याद रखे कि ये ख़त्म होगा। जो तालिब-ए-इल्म भूल जाए कि पेपर उठाया जाएगा वो पढ़ता नहीं।

दूसरी: आज़माइश 'अह्सनु 'अमला' है — अमल में **बेहतर**। ज़्यादा अमल में

नहीं। फ़ुज़ैल इब्ने 'इयाज़ से जब पूछा गया कि यहाँ 'बेहतर' से क्या मुराद है, तो उन्होंने कहा: वो अमल जो सबसे ज़्यादा **मुख़्लिस** और सबसे **दुरुस्त** हो — मुख़्लिस यानी सिर्फ़ अल्लाह के लिए, और दुरुस्त यानी सुन्नत के मुताबिक़। बेटा, ये अकेली आयत एक साथ दो धोके तबाह कर देती है: उस दिखावे वाले का धोका जो लोगों को दिखाने के लिए बहुत करता है, और उस जोश-भरे इबादत-गुज़ार का धोका जो अपने तरीक़े ख़ुद घड़ता है। **मिक़्दार नहीं, मेयार।**

और फिर — जैसा इस सूरह में हमेशा — अज़मत के फ़ौरन बाद रहमत आती है: 'और वही ग़ालिब, **बख़्शने वाले** हैं।' बेटा, महसूस कीजिए: आपको ये बताने के ठीक बाद कि ज़िंदगी एक इम्तिहान है, वो अपना ता'आरुफ़ उस ज़ात के तौर पर कराते हैं जो माफ़ करती है। **मुमतहिन ही बख़्शने वाला भी है।**

दोबारा देखो — और फिर देखो

फिर अल्लाह हमें अपनी सनअत का जायज़ा लेने की दावत देते हैं: 'जिसने सात आसमान तह-ब-तह बनाए। मा तरा फ़ी ख़ल्क़िर्-रह्मानि मिन तफ़ावुत — तुम **अर-रहमान** की तख़्लीक़ में कोई बे-क़ायदगी नहीं देखोगे। फ़र्जिइल्-बसर — तो अपनी नज़र लौटाओ: हल तरा मिन फ़ुतूर — क्या तुम्हें कोई झोल, कोई दरार नज़र आती है? सुम्मर्-जिइल्-बसर करतैन — फिर अपनी नज़र **बार बार** लौटाओ: यन्क़लिब इलैकल्-बसरु ख़ासिअंव्-व हुव हसीर — तुम्हारी निगाह **थक** कर, आजिज़ हो कर तुम्हारी तरफ़ लौट आएगी।'

बेटा, ग़ौर कीजिए वो यहाँ कौन सा नाम इस्तेमाल करते हैं: **अर-रहमान**। सबसे रहीम की तख़्लीक़ — क्योंकि आसमानों की ये वसीअ, बे-ऐब मशीनरी उन मख़्लूक़ात के फ़ायदे के लिए बनाई गई जिन्होंने इसे माँगा भी नहीं था।

और ग़ौर कीजिए आयत क्या करती है: ये ये नहीं कहती 'यक़ीन करो कि कोई ऐब नहीं।' ये कहती है **देखो। फिर दोबारा देखो।** ये जायज़े की दावत देती है — और यक़ीनी नतीजा: आँख थक कर लौटती है, कोई दरार न पा कर। बेटा, इंसानियत ने उसके बाद ऐसे टेलिस्कोप बनाए जो अरबों नूरी सालों के पार झाँकते हैं, और रिपोर्ट

बिल्कुल वैसी है जैसी इस आयत ने पेश-गोई की: निज़ाम पर निज़ाम, क़ानून पर क़ानून। **आजिज़ आँख ही वो है जो आख़िर-कार देख लेती है।**

'और बेशक हमने सबसे क़रीब आसमान को **चिराग़ों** से सजाया' — मसाबीह। हुस्न भी, बेटा, सिर्फ़ काम-काज नहीं: आपके रब ने दुनिया की छत को **सजाया**।

काश हम सुनते, या समझते

फिर सूरह आग का दरवाज़ा खोलती है और — ये हैरत-अंगेज़ बात है — हमें उसके लोगों की बात सुनवाती है। दरोग़े उनसे पूछेंगे: 'अ लम य'तिकुम नज़ीर — क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया?'

और उनका जवाब, बेटा — हमारे फ़ायदे के लिए दर्ज, ताकि हमें कभी ये न देना पड़े: 'बला, क़द जा-अना नज़ीर — हाँ, एक डराने वाला आया तो था — मगर हमने झुठलाया।'

और फिर वो इक़बाल-ए-जुर्म जिसे हम सब को अपने दिल पर चिपका लेना चाहिए: 'व क़ालू लौ कुन्ना नस्म'उ औ न'क़िलु मा कुन्ना फ़ी अस्हाबिस्-स'ईर — और वो कहेंगे: **काश हम सुनते, या समझते**, तो हम भड़कती आग वालों में न होते।'

बेटा, यहाँ रुकिए। एक छोटे से जुमले में, आग के लोग अपनी ही बीमारी की तशख़ीस कर देते हैं — और वो ये नहीं कि वो ग़रीब थे, या बद-क़िस्मत, या ग़लत सदी में पैदा हुए। **दो औज़ार** उनके पास थे और उन्होंने एक भी इस्तेमाल न किया: **सम्'** — एक सुनने वाला कान जो नसीहत क़ुबूल करे; और **'अक़्ल** — एक सोच-बिचार वाला ज़ेहन जो किसी मामले को उसके अंजाम तक सोचे।

बस इतना ही लगता है, बेटा। इंसान या तो उन से सुनता है जो जानते हैं, या ख़ुद एक ईमानदार ज़ेहन से सोचता है। जो दोनों में से कुछ नहीं करता — जो नसीहतों को बोर समझ कर रद्द करता है और कभी अपने ख़यालों के साथ नहीं बैठता — वो **दो बे-इस्तेमाल औज़ार जेब में लिए** तबाही में चला जाता है।

फिर, इसके बर-अक्स: 'बेशक जो अपने रब से **बिल-ग़ैब** — बे-देखे, अकेले में —

डरते हैं, उनके लिए मग़फ़िरत और बड़ा अज्र है। अ ला य'अ्लमु मन ख़लक़ — क्या वो नहीं जानता जिसे उसने बनाया? व हुवल्-लतीफ़ुल्-ख़बीर — और वही बारीक-बीन, ख़बरदार है।' बेटा, क्या दलील है: **बनाने वाला अपनी बनाई चीज़ को जानता है**, उसके अंदर की सरगोशियों तक।

ज़मीन पर चलो — मगर बे-ख़ौफ़ मत हो

फिर सूरह हमें अपने पाँव तले की ज़मीन पर ले आती है: 'हुवल्-लज़ी ज'अल लकुमुल्-अर्ज़ ज़लूलन — वही है जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए **ताबे-दार** बनाया — फ़म्शू फ़ी मनाकिबिहा व कुलू मिर्-रिज़्क़िह — तो उसके रास्तों पर **चलो** और उसके रिज़्क़ में से खाओ — व इलैहिन्-नुशूर — और उसी की तरफ़ दोबारा उठना है।'

'ज़लूल', बेटा, वो लफ़्ज़ है जो एक सधे हुए, फ़रमाँबरदार ऊँट के लिए इस्तेमाल होता है जो बैठ जाए ताकि एक बच्चा उसपर चढ़ सके। ये गरजता हुआ सय्यारा, बे-इंतिहा रफ़्तार से घूमता हुआ — अल्लाह ने इसे सधाया और आपके लिए झुका दिया। और वो ये नहीं कहते 'बैठ कर रिज़्क़ का इंतिज़ार करो' — वो कहते हैं **चलो**। कोशिश के साथ भरोसा, बेटा।

और फिर दाइमी सलामती के धोके को तोड़ने वाले दो हिला देने वाले सवाल: 'क्या तुम बे-ख़ौफ़ हो गए हो कि जो ऊपर है वो ज़मीन को तुम्हें निगल जाने का हुक्म न दे दे? या क्या तुम बे-ख़ौफ़ हो कि वो तुम पर पत्थरों का तूफ़ान न भेज दे?'

बेटा, हम एक ऐसे फ़र्श पर रहते हैं जो खुल सकता है, एक ऐसे आसमान के नीचे जो बरस सकता है, एक ऐसे जिस्म में जो रुक सकता है — और फिर भी हम ना-फ़रमानी में लापरवाही से 'महफ़ूज़' महसूस करते हैं। **मोमिन की सलामती ज़मीन की मज़बूती में नहीं; ये अपने रब की हिफ़ाज़त में है।**

और फिर अल्लाह हमें याद दिलाते हैं कि वो औज़ार ख़ुद किसने दिए जिनसे हम उनका इनकार करते हैं: 'कहिए: वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए **कान** और **आँखें** और **दिल** बनाए — क़लीलम्-मा तश्कुरून — तुम

थोड़ा ही शुक्र करते हो।' बेटा, वो कान जो नसीहत सुनता है, वो आँख जो उसे पढ़ती है, वो दिल जो उसे तोलता है — तीनों उस ज़ात के तोहफ़े थे जिसका इनकार किया जा रहा है।

अगर तुम्हारा पानी उतर जाए

जैसे सूरह ख़त्म होती है, मुनकिर ताना देते हैं: 'ये वादा कब है?' अल्लाह अपने रसूल ﷺ को हुक्म देते हैं कि वक़ार से जवाब दें: 'कहिए: इल्म तो सिर्फ़ अल्लाह के पास है, और मैं तो बस एक खुला डराने वाला हूँ।'

फिर, बेटा, ये ख़ूबसूरत सबक़ आता है कि एक मोमिन नफ़रत का जवाब कैसे देता है। वो नबी ﷺ की मौत की दुआ किया करते थे। अल्लाह उन्हें हुक्म देते हैं कि जवाब दें: 'कहिए: भला बताओ — चाहे अल्लाह **मुझे** और मेरे साथियों को हलाक कर दें, या हम पर रहम फ़रमाएँ — तो मुनकिरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन बचाएगा?' यानी: मेरी मौत या मेरी ज़िंदगी तुम्हारी नजात नहीं; **अपनी हालत की फ़िक्र करो।** और फिर: 'कहिए: वही अर-रहमान है; हम उस पर ईमान लाए, और उसी पर भरोसा किया — तो तुम जल्द जान लोगे कि खुली गुमराही में कौन है।' बेटा — सच्चों का जवाब: कोई जवाबी गाली नहीं, बस **तवक्कुल और वक़्त।**

और फिर, आख़िरी आयत — और क्या इख़्तिताम है। अल्लाह तीस आयतों की बादशाहत को किसी गरज के मंज़र पर बंद कर सकते थे। इसके बजाय वो इसे बंद करते हैं... **एक गिलास पानी पर**: 'क़ुल अर-अयतुम इन अस्बह मा-उकुम ग़ौरन — कहिए: भला बताओ — अगर तुम्हारा पानी ज़मीन में उतर जाए — फ़-मंय्-य'तीकुम बि-मा-इम्-म'ईन — तो तुम्हें बहता पानी कौन ला देगा?'

बेटा, आज रात अपनी रसोई का नल खोल कर आयत दोबारा पढ़िए। हर गिलास पानी जो आपने कभी पिया वो एक ऐसे कुएँ से ऊपर आया या एक ऐसे बादल से नीचे जिसे आपने न बनाया न आप उसपर हुक्म चला सकते हैं। अगर कल पानी की सतह सौ मीटर नीचे उतर जाए, तो दुनिया की सारी दौलत और टेक्नोलॉजी बे-बस खड़ी रह जाएगी।

तो **मुल्क** की सूरह — पूरी बादशाहत की — अपनी बादशाही बिजली से नहीं, बल्कि आपकी ज़िंदगी की सबसे आम चीज़ से साबित कर के ख़त्म होती है। यही इस सूरह का कमाल है, बेटा: ये उस हाथ से शुरू हुई जो सारी बादशाहत थामे हुए है, और आपकी रसोई के नल पर ख़त्म हुई।

इस सूरह से क्या सीखा

1. अल-मुल्क हर रात सोने से पहले पढ़िए — ये ख़ुद नबी ﷺ की आदत थी, और आपकी क़ब्र तक आगे भेजा गया एक वकील।

2. जिस से आप डरते या जिसके पीछे भागते हैं वो सब एक ही हाथ में है — अपनी ख़ौफ़ की फ़ेहरिस्त उसी हिसाब से छोटी कर लीजिए।

3. आज़माइश 'बेहतर' की है, 'ज़्यादा' की नहीं: अमल जो अल्लाह के लिए मुख़्लिस और सुन्नत पर दुरुस्त हों।

4. दो बचाने वाले औज़ार तेज़ रखिए — एक सुनने वाला कान और एक सोच-बिचार वाला ज़ेहन; उनकी ग़ैर-मौजूदगी आग वालों का इक़बाल-ए-जुर्म है।

5. अल्लाह से 'बिल-ग़ैब', अकेले में डरिए — बनाने वाला अपनी बनाई चीज़ के अंदर की सरगोशियाँ जानता है।

6. रिज़्क़ के लिए सधी हुई ज़मीन पर चलिए — कोशिश परों में, भरोसा दिल में।

7. ना-फ़रमानी में कभी लापरवाही से महफ़ूज़ मत महसूस कीजिए — और कभी मत भूलिए कि एक गिलास पानी उसकी बादशाही की रोज़ाना दलील है।

या अल्लाह, जिस के हाथ में सारी बादशाहत है — हमें उन में बना दीजिए जो सुनते और समझते हैं, हमारे अमल को बेहतर और मुख़्लिस बना दीजिए, और सूरह अल-मुल्क को क़ब्र में हमारा वकील बना दीजिए। आमीन।